भूचर मोरी का युद्ध (जाडेजा राजपूत, 18 जुलाई 1591 ई.): शरणागत धर्म, सैन्य संघर्ष एवं ऐतिहासिक विश्लेषण

The Battle of Bhuchar Mori (JADEJA RAJPUT, 1591 AD): A Comprehensive Historical Analysis

प्रधान शोधकर्ता / संकलनकर्ता: डॉ. गोविंद मालवीय (REAL HI STORY)

प्रकाशन तिथि: अगस्त 2026

विषय वर्गीकरण: मध्यकालीन भारतीय इतिहास, गुजरात एवं राजपूत इतिहास, मुगल साम्राज्य

डिजिटल आर्काइव पहचानकर्ता: REAL-HIST-1591-BM

1. संक्षिप्त सार (Abstract)

18 जुलाई 1591 (विक्रम संवत 1648, आषाढ़ वद 7) को नवानगर (वर्तमान जामनगर, गुजरात) की ध्रोल तहसील स्थित 'भूचर मोरी' के मैदान में लड़ा गया युद्ध मध्यकालीन भारतीय इतिहास की अद्वितीय घटनाओं में से एक है। यह युद्ध साम्राज्य विस्तार या क्षेत्रीय लिप्सा के लिए नहीं, बल्कि 'शरणागत धर्म' (शरणार्थी की रक्षा) के सिद्धांत की रक्षा के लिए लड़ा गया था। गुजरात के अंतिम सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह तृतीय को शरण देने के कारण नवानगर के जाडेजा शासक जाम सत्ताजी (प्रथम) और अकबर के सूबेदार मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका की मुगल सेना के बीच यह भीषण संग्राम हुआ। इसे लोक-साहित्य और प्रामाणिक ग्रंथों में 'गुजरात का पानीपत' या 'गुजरात का जलियांवाला' कहा जाता है।

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं युद्ध के कारण

1572-73 ई. में मुगल सम्राट अकबर द्वारा गुजरात सल्तनत के विलय के उपरांत भी यह क्षेत्र पूर्णतः शांत नहीं हुआ था। सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह तृतीय ने मुगल कैद से भागकर अपना राज्य पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया।

- **शरणागत रक्षण:** सुल्तान ने नवानगर के जाडेजा शासक जाम सत्ताजी की शरण ली।
- **मुगल फरमान:** अकबर के दूध-भाई और गुजरात के सूबेदार मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका (7,000 का मनसबदार) ने सुल्तान को सौंपने का निर्देश दिया।
- **जाडेजा शासक का उत्तर:** जाम सत्ताजी ने क्षत्रिय परंपरा का पालन करते हुए शरणार्थी को सौंपने से स्पष्ट इंकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप मुगलों ने नवानगर पर सैन्य चढ़ाई की।

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

3. उभय पक्ष की सैन्य संरचना (Order of Battle)

विवरण / पहलू	नवानगर संयुक्त गठबंधन (जाडेजा पक्ष)	मुगल शाही सेना (अकबर/कोका पक्ष)
मुख्य सेनापति	जाम सत्ताजी / कुंवर अजाजी जाडेजा	मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका (खान-ए-आजम)
अनुमानित सैन्य बल	20,000 से 30,000 सैनिक	30,000 अनुशासित शाही सैनिक
घटक दल	• जाडेजा राजपूत घुड़सवार एवं पैदल • सुल्तान मुज़फ़्फ़र का वफ़ादार दस्ता	• हरावल (नौरंग खान, गुज़र खान) • कलब/मध्य (अज़ीज़ कोका)

विवरण / पहलू	नवानगर संयुक्त गठबंधन (जाडेजा पक्ष)	मुगल शाही सेना (अकबर/कोका पक्ष)
	• दौलत खान घोरी (जूनागढ़) • लोमराज काठी (खेरड़ी) • कच्छी सहयोगी बल	• वाम व दक्षिण (सैय्यद कासिम बड़हा, मिर्ज़ा अनवर) • शाही तोपखाना

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

4. प्रमुख घटनाक्रम एवं वीरगति

विवाह के मंडप से रणभूमि

युद्ध वाले दिन (18 जुलाई 1591) नवानगर के युवराज कुंवर अजाजी का विवाह पारकर (थारपारकर, सिंध) की सोढा परमार राजकुमारी सूरजबा (राजबा) के साथ संपन्न हो रहा था। तोपों की गूंज सुनते ही कुंवर अजाजी ने फेरों की रस्म बीच में छोड़कर विवाह के मौड़ (मुकुट) और लाल जोड़े में ही सेनापति के रूप में रणभूमि की ओर प्रस्थान किया।

मूसलाधार बारिश और कूटनीतिक धोखा

- **तोपखाना बेअसर:** आषाढ़ मास की मूसलाधार बारिश के कारण मुगलों का बारूद गीला हो गया, जिससे तोपखाना निष्प्रभावी हो गया और युद्ध आमने-सामने की खूनी भिड़ंत में बदल गया।

- **विश्वासघात:** प्राथमिक स्रोतों के अनुसार, जूनागढ़ के दौलत खान घोरी और लोमराज काठी गुप्त प्रलोभन के कारण निर्णायक मोड़ पर युद्धक्षेत्र से पीछे हट गए।
- **अजाजी का बलिदान:** कुंवर अजाजी ने सीधे अज़ीज़ कोका के हाथी पर आक्रमण किया, किंतु मुगलों के घेरे में आने के कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

सूरजबा की अग्नि समाधि (सती)

युद्धोपरांत नवविवाहिता राजकुमारी सूरजबा ने भूचर मोरी के खूनी मैदान में पहुँचकर अपने पति का कटा हुआ शीश खोज निकाला और उसी स्थान पर पति का शीश गोद में रखकर अग्नि समाधि (सती) ली।

5. प्रामाणिक स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण

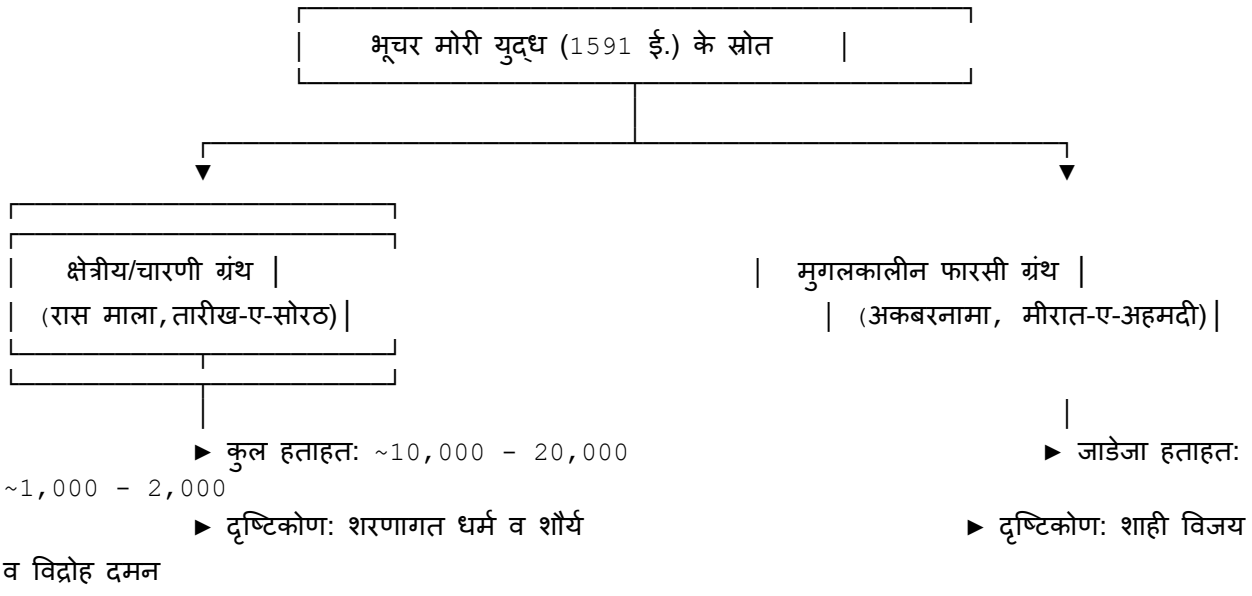
भूचर मोरी युद्ध (1591 ई.) के स्रोत
क्षेत्रीय/चारणी ग्रंथ
(रास माला, तारीख-ए-सोरठ)
मुगलकालीन फारसी ग्रंथ
(अकबरनामा, मीरात-ए-अहमदी)
► कुल हताहत: ~10,000 - 20,000
► दृष्टिकोण: शरणागत धर्म व शौर्य
► जाडेजा हताहत: ~1,000 - 2,000
► दृष्टिकोण: शाही विजय व विद्रोह दमन

6. ऐतिहासिक महत्व एवं निष्कर्ष

भूचर मोरी का युद्ध केवल एक सैन्य संघर्ष नहीं था, बल्कि यह नैतिक मूल्यों और शरणार्थी रक्षण के सिद्धांत हेतु दिया गया अभूतपूर्व बलिदान था। यद्यपि मुगलों को रणनीतिक विजय प्राप्त हुई, किंतु भारी जनहानि के कारण वे नवानगर का अस्तित्व समाप्त नहीं कर सके। कालंतर में जाडेजा वंश का शासन पुनः स्थापित हुआ। ध्रोल स्थित भूचर मोरी स्मारक (शाहिद वन) में आज भी कुंवर अजाजी, राजकुमारी सूरजबा और उनके अश्व की 'पालिया' (शहीदी स्मारक) इस ऐतिहासिक शौर्य गाथा की गवाही देती हैं।

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

Document Title: Battle of Bhuchar Mori (1591 AD) - Research Monograph

Author & Researcher: Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY)

Date of Archiving: August 13, 2026

License: Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International (CC BY-NC-SA 4.0).

The Battle of Bhuchar Mori (Jadeja Rajput, July 18, 1591 AD): Sharanaagat Dharma, Military Conflict, and Historical Analysis

Principal Investigator / Author: Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY)

Publication Date: 13th August 2026

Subject Classification: Medieval Indian History, Gujarat & Rajput History, Mughal Imperial Campaigns

Digital Archival Identifier: REAL-HIST-1591-BM-ENG

1. Abstract

Fought on July 18, 1591 AD (Vikram Samvat 1648, Ashadh Vad 7) near Dhrol in present-day Jamnagar district, Gujarat, the Battle of Bhuchar Mori stands as one of the most significant military engagements in medieval Western India. Fought not for territorial conquest, but for the moral principle of *Sharanaagat Dharma* (the sacred duty to protect a asylum seeker), the conflict pitted the Jadeja Rajput alliance of Nawanagar led by Jam Sattaji (Jam Sataji I) against the Imperial Mughal forces commanded by Mirza Aziz Koka. Known in oral tradition and regional chronicles as the "Panipat of Gujarat," this confrontation resulted in over 20,000 casualties in a single afternoon.

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

2. Historical Background & Causes of Conflict

Following Emperor Akbar’s annexation of the Gujarat Sultanate in 1572–1573 AD, regional stability remained precarious. Sultan Muzaffar Shah III, the last Sultan of Gujarat, escaped Mughal captivity and sought to reclaim his throne through local alliances.

- **Code of Asylum (*Sharanaagat Dharma*):** Pursued by imperial troops, Sultan Muzaffar sought sanctuary with Jam Sattaji, the sovereign Jadeja ruler of Nawanagar (modern Jamnagar).

- **Mughal Imperial Ultimatum:** Mirza Aziz Koka, Akbar's foster brother and Governor of Gujarat (holding a 7,000 *Mansab* rank), dispatched a command demanding the immediate extradition of the fugitive Sultan.
- **The Jadeja Refusal:** Upholding the ancient Kshatriya code, Jam Sattaji refused, stating that a guest seeking sanctuary would never be surrendered to an enemy. Enraged, Mirza Aziz Koka launched a full-scale imperial invasion against Nawanagar.

3. Order of Battle (Military Structure)

Parameter / Aspect	Nawanagar Coalition (Jadeja Alliance)	Imperial Mughal Forces
Supreme Commander	Jam Sattaji / Crown Prince Kunwar Ajaji	Mirza Aziz Koka (*Khan-i-Azam*)
Estimated Strength	~20,000 to 30,000 Allied Troops	~30,000 Imperial Troops
Key Formations & Factions	• Nawanagar Jadeja Cavalry & Infantry • Sultan Muzaffar's Loyalist Contingent • Daulat Khan Ghori (Junagadh) • Lomraj Kathi (Kherdi) • Cutch (Kachchh) Allies	• Vanguard (*Harawal* under Naurang Khan) • Center (*Kalab* under Aziz Koka) • Wings (Syed Kasim Barha, Mirza Anwar) • Heavy Imperial Artillery

4. Key Battlefield Events & Sacrifices

From Wedding Mandap to Battlefield

On July 18, 1591, as the two armies arrayed at Bhuchar Mori, Crown Prince **Kunwar Ajaji** (son of Jam Sattaji) was celebrating his wedding with Princess Surajba (Raja Ba) of Parkar (Tharparkar, Sindh). Hearing the boom of Mughal cannons from nearby Dhrol, Kunwar Ajaji severed his nuptial ties, bowed to his bride, and mounted his warhorse in his red wedding attire (*Maur*) to take command of the Jadeja forces.

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

Torrential Rain & Strategic Betrayal

- **Artillery Rendered Ineffective:** Heavy Ashadh monsoon rains flooded the muddy plateau, soaking the gunpowder and rendering Mughal cannons useless. The battle devolved into intense hand-to-hand combat with swords, spears, and daggers.
- **Treachery:** Primary regional accounts (*Ras Mala*, *Tarikh-i-Sorath*) record that Mirza Aziz Koka secretly bribed Daulat Khan Ghori of Junagadh and Lomraj Kathi. At a critical juncture, both factions withdrew from the field, exposing the core Jadeja army.
- **Martyrdom of Kunwar Ajaji:** Kunwar Ajaji charged directly at Mirza Aziz Koka's central formation, leaping toward the commander's war elephant. Surrounded by imperial guards, the young prince fought valiantly until he was decapitated on the field.

Battlefield Sati

Following the defeat, Princess Surajba traveled directly to the blood-soaked field of Bhuchar Mori. She searched among thousands of fallen soldiers, recovered her husband's severed head, and holding it in her lap, entered the funeral pyre (*Agni Samadhi*) directly on the battlefield.

5. Comparative Source Analysis

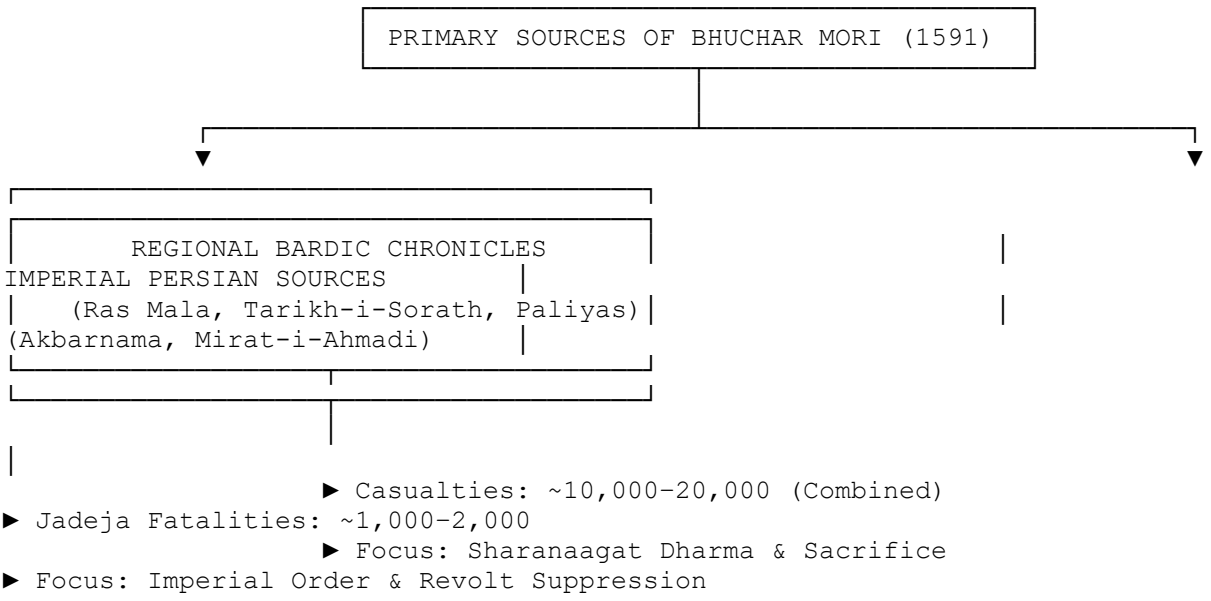
PRIMARY SOURCES OF BHUCHAR MORI (1591)
REGIONAL BARDIC CHRONICLES
(Ras Mala, Tarikh-i-Sorath, Paliyas)
IMPERIAL PERSIAN SOURCES
(Akbarnama, Mirat-i-Ahmadi)
► Casualties: ~10,000–20,000 (Combined)
► Jadeja Fatalities: ~1,000–2,000
► Focus: Sharanaagat Dharma & Sacrifice
► Focus: Imperial Order & Revolt Suppression

6. Historical Significance & Legacy

The Battle of Bhuchar Mori represents a rare historical instance where a state knowingly risked complete destruction to uphold an ethical code of protection. Although the Imperial army achieved a tactical victory, their heavy losses prevented them from dismantling Nawanagar completely. Peace was subsequently negotiated, and Jam Sattaji retained his throne. Today, the memorial site (*Shahid Van*) at Dhrol preserves the hero-stones (*Paliyas*) of Kunwar Ajaji, Princess Surajba, and his warhorse.

under **Section 107 of the Copyright Act 1976 (Fair Use)**.

© August 13, 2026, Dr. Govind Malviya (REAL HI STORY).

Licensed under Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International (CC BY-NC-SA 4.0).